4 दानी पेड़

एक पेड़ था। वह एक छोटे लड़के को बहुत प्यार करता था। लड़का रोज पेड़ के पास आता। वह फूलों की माला बनाता, उसके तने पर चढ़ता, उसकी शाखाओं से झूलता और उसके फल खाता। फिर वह पेड़ के साथ लुका–छिपी खेलता। जब वह थक जाता तो पेड़ की छाँव में सो जाता। लड़का पेड़ से बहुत प्यार करता था। पेड़ बहुत खुश था।

समय बीतता गया। लड़का जवान हो गया। वह अब पेड़ पर खेलने नहीं आता। पेड़ अकेले दुखी होता। जब लड़का एक दिन आया तो पेड़ बहुत खुश हुआ। लड़के ने पेड़ से कहा– "मुझे पैसों की जरूरत है। मैं बहुत सी चीजें खरीदना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?"

पेड़ ने कहा– " पैसे तो मेरे पास हैं नहीं। तुम मेरे फल तोड़ लो और उन्हें बाज़ार में बेच दो। इससे तुम्हें पैसे मिल जाएँगे।"

लड़का सब फल तोड़ कर ले गया। पेड़ अभी भी खुश था।

कई साल के बाद वह युवक फिर पेड़ के पास आया। "मेरी शादी होने वाली है। मुझे एक घर चाहिए। क्या तुम मुझे एक घर दे सकते हो?" उसने पेड़ से कहा।

पेड़ ने कहा–"घर तो मेरे पास है नहीं। लेकिन तुम मेरी शाखायें काट कर उनसे घर बना लो।" युवक पेड़ की सभी शाखाओं को काटकर ले गया। पेड़ का बस तना बचा रह गया। पेड़ अभी भी खुश था।

बहुत साल बीत गए। लड़का अधेड़ उम्र का आदमी बन गया था।

एक दिन पेड़ के पास आया और बोला– "मुझे मछली पकड़ने के लिये एक नाव चाहिए। क्या तुम मुझे एक नाव दे सकते हो?

पेड़ ने कहा– " नाव तो मेरे पास है नहीं। मेरा तना बचा है। उसे काट कर नाव बना लो।"

आदमी ने पेड़ का तना काटा और उसकी नाव बनाई। पेड़ अब भी खुश था।

पेड़ का अब केवल ठूंठ बचा था।

इस तरह कई साल बीत गए। एक दिन एक बूढ़ा आदमी पेड़ के पास आया। पेड़ ने उसे फौरन पहचान लिया। यह वही छोटा लड़का था। पेड़ उसे देखकर बहुत खुश हुआ। उससे खुशी के मारे बोलते नहीं बना। पेड़ ने कहा– "बेटा, मैं तुम्हें कुछ देना चाहता था। परंतु अब मेरे पास बचा ही क्या है? मेरे फल नहीं बचे जिन्हें तुम खा सको। मेरी शाखायें नहीं रहीं जिनसे कि तुम लटक सको। मेरा तना भी नहीं बचा जिस पर तुम चढ़ सको। बताओ, मैं तुम्हें क्या दूँ?"

बूढ़े ने कहा– " तुम देख रहे हो मेरी हालत। मेरे सब दाँत गिर चुके हैं। मैं अब फल नहीं चबा सकता। अब मेरी उम्र शाखाओं पर झूलने की नहीं रही। तने पर चढ़ने का दम अब मुझमें नहीं रहा। मैं बहुत थक गया हूँ। मुझे बस आराम से बैठने और सुस्ताने के लिए एक जगह चाहिए।"

"तो फिर आओ और मेरे ठूंठ पर शांति से बैठो।" पेड़ ने कहा।

बूढ़ा ठूंठ पर बैठ कर सुस्ताने लगा। पेड़ अब भी बहुत खुश था।

-शेल स्लिवरस्टाइन

© BSTBPC WEBCOPY. NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

ठूंठ– पत्ती एवं टहनी विहीन पेड़ **शाखा**– डाली, टहनी

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. पेड़ से सब कुछ लेने के बाद भी आदमी खुश क्यों नहीं था?
2. अपना सब कुछ दे देने पर भी पेड़ खुश क्यों था?
3. पेड़ ने आदमी के बचपन से बुढ़ापे तक की किन-किन जरूरतों को पूरा किया?
4. पेड़ को दानी क्यों कहा गया है?
5. बड़ा होने पर लड़का दु:खी क्यों रहने लगा?
6. **खाली जगहों को भरिए-**

   (क) पेड़ छोटे लड़के से .... करता था।

   (ख) वह पेड़ के साथ ....खेलता।

   (ग) मुझे पैसों की ....है।

   (घ) मैं ....खरीदना चाहता हूँ।

पाठ से आगे

1. दुनिया में पेड़ों की संख्या को लगातार कम किया जा रहा है। अगर पेड़ों की संख्या इसी प्रकार कम होती जाए तो बीस वर्ष के बाद का समाज कैसा होगा?
2. पेड़ों को सुरक्षित रखने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?
3. दिये गये शब्दों का प्रयोग कर एक छोटी-सी कहानी लिखिए।

   मेढक, तालाब, बगुला, बच्चे, मछली, साँप
4. 'मेरा प्रिय वृक्ष' विषय पर 50 शब्द लिखिए।

व्याकरण

1. **नीचे दिये गये शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कर उनके लिंग बताइये -**

   उदाहरण शाखा - (स्त्रीलिंग) पेड़ की शाखा टूट कर गिर गई।

   आम -

   खिचड़ी -

   रंग -

   बन्धु -

   बाज़ार -

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED
Developed by: ABSOL www.absol.in

2. निम्नलिखित वाक्य वर्तमान काल में है । इन्हें क्रमशः भूतकाल और भविष्यत्काल में लिखिए।

(क) मुझे पैसों की जरूरत है। (वर्तमानकाल)

.... (भूतकाल)

.... (भविष्यत्काल)

(ख) मैं तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ । (वर्तमानकाल)

.... (भूतकाल)

.... (भविष्यत्काल)

(ग) क्या तुम मुझे नाव दे सकते हो? (वर्तमानकाल)

.... (भूतकाल)

.... (भविष्यत्काल)

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरा कीजिए-

(क) युवक सभी .... को काटकर ले गया । (शाखा, शाखाओं)

(ख) आदमी ने तना से नाव .... । (बनाई, बनाया)

(ग) कई साल बीत .... । (गए, गया)

(घ) वह .... की माला बनाता था । (फूल, फूलों)

(ङ) मुझे .... की जरूरत है । (पैसों, पैसा)

©BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. आप अपने आस-पास के पेड़ों की सूची बनाइये तथा बड़े समूह में साथियों से चर्चा कीजिए कि ये पेड़ हमारे दैनिक जीवन में किस प्रकार उपयोगी हैं?
2. किन्हीं चार फलदार वृक्षों के चित्र बनाइए।
3. पेड़ हमारे लिए धन के स्रोत हैं, कैसे? चर्चा कीजिए।